



असमिया भाषा पर मुक्त अर्थनीति का प्रभाव

दिगंत बोरा

शोधार्थी, विभाग हिंदी, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनों हिल्स, अरुणाचल प्रदेश, भारत ।

सारांश

भाषा परिवर्तनशील है। भाषा समय के साथ परिवर्तन होती रहती है। आधुनिकीकरण, मुक्त अर्थनीति, विश्वायन और व्यापार-वाणिज्य के प्रभाव से असमिया भाषा में व्यापक परिवर्तन हुआ है। विज्ञान की उन्नति और व्यापार-वाणिज्य में नये-नये सामग्री आने के साथ-साथ भाषा में भी नये-नये शब्दों ने अपना स्थान बना लिया है। अंग्रेजी या दूसरे भाषा से आये हुए शब्दों के लिए असमिया भाषा में कोई प्रतिशब्द नहीं है। यदि कोई प्रतिशब्द है भी, तो वे भी प्रचलन में नहीं हैं। इसलिए दूसरे भाषा के शब्दों ने असमिया भाषा में अपनी जगह बना ली है। कम्प्यूटर के लिए असमिया का प्रतिशब्द है 'परिकलन यंत्र'। आज शायद ही कोई व्यक्ति है जो परिकलन यंत्र ही कम्प्यूटर है, यह जानता हो। परंतु कम्प्यूटर को हर कोई जानता है। आज असमिया भाषा में असमिया प्रतिशब्दों के अभाव में कम्प्यूटर, मोबाइल, बैंक आदि से संबंधित अनेक शब्दों ने अपना स्थान बना लिया है। आज आधुनिकीकरण के प्रभाव से लोगों में वाक्यों के अधुरे प्रयोग की फैशन चल पड़ा है। जैसे – प्रश्न – 'कत जोवा ?' उत्तर – 'गुवाहटी', परंतु ये वाक्य होना चाहिए था – 'गुवाहाटीलै जाउ'। आज वाक्य में असमिया शब्दों की जगह अनेक विदेशी शब्दों ने ले लिया है। उदाहरण – 'मई मारकेट जाउ', 'मई स्कूल जाउ', 'मई रेंतत थाको' आदि। आज विश्वायन के प्रभाव से समाज में स्त्री-पुरूष में भेद समाप्त होने के साथ-साथ भाषा में भी लिंग भेद समाप्त हो गई है। उदाहरण – आज लेखक, सभापति, सम्पादक, वकील, प्रवक्ता आदि शब्दों का प्रयोग दोनों लिंगों के लिए समान रूप में किया जाता है। इसी तरह विश्वायन के प्रभाव से असमिया भाषा में अनेक परिवर्तन हुआ है।

मूल शब्द : आधुनिकीकरण, विश्वायन, व्यापार-वाणिज्य, मुक्त अर्थनीति, समाज, संस्कृति, असमिया, भाषा, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि ।

प्रस्तावना

सृष्टि के प्रत्येक वस्तु के समान भाषा भी परिवर्तित होती रहती है। संसार में कोई भी ऐसी भाषा नहीं है जो परिवर्तित न हुई हो। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परिवर्तन की मात्रा में अंतर हो सकती है, परंतु संसार की हर एक भाषा में परिवर्तन आती रहती है। यह परिवर्तन भाषा के सभी तत्वों में पाया जाता है। ध्वनि, अर्थ, व्याकरण, शब्द, वाक्य सभी परिवर्तन आता रहता है। परिवर्तन भाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

शोध का उद्देश्य

1. असमिया भाषा में मुक्त अर्थनीति के प्रभाव से जो भी बदलाव हुई है उस पर चर्चा करना ।
2. भाषा पर मुक्त अर्थनीति के प्रभाव को समझना ।

मूल विषय

“सृष्टि के प्रत्येक वस्तु के समान भाषा भी परिवर्तित होने वाली वस्तु है। किसी देश और किसी युग की भाषा में ऐसी नहीं रही जो परिवर्तित न हुई हो। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परिवर्तन के मात्रा का अंतर भले ही हो, परिवर्तन का क्रम अनिवार्य है। यह परिवर्तन भाषा के सभी तत्वों में पाया जाता है। ध्वनि, शब्द, व्याकरण, अर्थ इनमें से कोई भी अपरिवर्तित नहीं है।” आधुनिकीकरण, मुक्त अर्थनीति, विश्वायन और व्यापार-वाणिज्य के प्रभाव से असमिया भाषा में व्यापक परिवर्तन आयी है। विज्ञान की उन्नति और व्यापार-वाणिज्य में नये-नये सामग्री आने के साथ-साथ भाषा में भी नये-नये शब्दों ने अपना स्थान बना लिया है। अंग्रेजी या दूसरे भाषा से आये हुए शब्दों के लिए असमिया भाषा में कोई प्रतिशब्द नहीं है। यदि कोई प्रतिशब्द है भी, तो वे भी प्रचलन में नहीं हैं। इसलिए दूसरे भाषा के शब्दों ने असमिया भाषा में अपनी जगह बना ली है। विश्वायन के प्रभाव से साम्प्रतिक असमिया भाषा के स्वरूप में बहुत सारे बदलाव देखने को मिलती है। सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से असमिया भाषा में विविध भाषाओं के अपना स्थान बना लेने के साथ-साथ असमिया भाषा के रूप को भी प्रभावित किया है। विश्वायन के प्रभाव ने आज समाज में स्त्री-पुरूष के भेद को समाप्त करने के साथ-साथ भाषा को भी प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए असमिया भाषा के स्त्री-पुलिंग संबंधी व्याकरणिक नियमों का अनुपालन कम मात्रा में होने लगा है। आज श्री, गवेषक, वकील, लेखक, सम्पादक, सभापति, संवाददाता, प्रवक्ता शब्दों का दोनों लिंगों के लिए समान रूप में होने लगा है।

शब्द विभक्तियों का प्रयोग कम होने लगा है। यहाँ तक कि विभक्तियों के विना ही वाक्य प्रयोग करने लगा है। उदाहरणार्थ – 'कत जोवा ?' उत्तर – 'गुवाहाटी जाम' इसमें असमिया 'लै' विभक्ति का लूप हुआ है। वर्तमान असमिया भाषा में प्रत्ययों का जहाँ-तहाँ करने की प्रवृत्ति बन गई है। उदाहरण के लिए – भाटतो हलने? परठातो लगा। आदि इसका सही प्रयोग है – भाटमुठि हलने? परठा एखन लगा। इसी तरह के और एक दो उदाहरण देख सकते हैं – जैसे 'चेंदेल तो कत आसे?' पेंसिलपात कत आसे? आदि। इसका सही प्रयोग है – चेंदेल जोर कर आसे? पेंसिल डाल कत आसे?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नये-नये आविष्कार से आज समाज में नये-नये सामग्री का आगमन हुआ है। उसी के साथ भाषा में नई शब्दों ने अपना जगह बना लिया है। अंग्रेजी या दूसरे भाषा से आये हुए शब्दों के लिए असमिया भाषा में कोई प्रतिशब्द नहीं है। यदि कोई प्रतिशब्द है भी, तो वे भी प्रचलन में नहीं हैं। इसलिए दूसरे भाषा के शब्दों ने असमिया भाषा में अपनी जगह बना ली है। कम्प्यूटर के लिए असमिया का प्रतिशब्द है 'परिकलन यंत्र'। आज शायद ही कोई व्यक्ति है जो परिकलन यंत्र ही कम्प्यूटर है, यह जानता हो। परंतु कम्प्यूटर को हर कोई जानता है। इंटरनेट का असमिया में कोई प्रतिशब्द नहीं है। इसी कारण इंटरनेट ने असमिया भाषा में अपना स्थान बना लिया है। इसी प्रकार कम्प्यूटर से संबंधित अनेक शब्दों का असमिया भाषा में आगमन हुआ है, जिसका असमिया भाषा में कोई प्रतिशब्द नहीं है। जैसे – माउच, पेन ड्राइव, स्केनार, प्रिंटर, भिडिओ गेम, लेपटप, डेस्कटप, हार्डडिस्क, सफ्टवेर, ले आउट, गूगल, ई-मैल, डाउनलोड, लोडिंग आदि।

कम्प्यूटर की मोबाइल भी विज्ञान का ही एक अवदान है। मोबाइल वर्तमान किसी की अमीरत्व का पहचान न रहकर सभी के लिए प्रयोजनीय एक सामग्री बन गई है। नयी पीढ़ी में मोबाइल का एक अलग ही महत्व है, जिससे समाज में अनेक समस्याएँ भी पैदा हुआ है। फिर भी इसी के साथ-साथ असमिया भाषा में भी विविध शब्दों का आगमन हुआ है। जैसे – रिचार्ज, सिमकार्ड, लापू, बेलेंच, हेंडसेट, रिंगटोन, मेसेज, टकटाइम, चार्जार्, नेटवर्क, भेलिडिटी, टिकटक, व्हात्स आप, फेसबुक आदि।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उन्नति के साथ-साथ यातायात व्यवस्था का भी उन्नति हुआ है। जिससे समाज में अनेक मोटरगाड़ी, साइकिल आदि का आगमन हुआ है। वैश्रीकरण ने समाज में अनेक सुविधा ला दी है। जिससे उन सामग्री के साथ-साथ अनेक शब्दों का भी भाषा में आगमन हुआ है। असमिया भाषा में भी इन शब्दों ने अपना स्थान बना लिया है। उदाहरण

के लिए – मारुटि सुजुकी, हुंडाइ, टी.वी.एस., बाइक, स्कूटी, स्कूटर, हिरो, हुंडा आदि।

विश्वायन प्रभाव से शिक्षा और अन्य विव्ध क्षेत्रों अनेक नये शब्दों का आगमन हुआ है। युनिवर्सिटी, कॉलेज, स्कूल आदि के साथ-साथ अनेक नये शब्दों का आगमन हुआ है। इन शब्दों का असमिया प्रतिशब्द नहीं होने के कारण इन शब्दों असमिया भाषा में अपना स्थान बना लिया है। जैसे – कोसिंग सेंटर, एंट्रेस, ग्रुप डिस्कसन, स्टडी लिभ, फेकाल्टी, टेक्स्ट, नीट आदि।

विज्ञान के उन्नति के साथ-साथ फिल्मों में भी उन्नति हुआ है। जिससे अनेक शब्दों अपना स्थान बना लिया है। कुछ उदाहरण देख सकते हैं – डिस्को भण्टि नानासिबा बेया लागे। सेल्फि ले ले ले सेल्फि ले। वसिंग पाउडर निर्मा आदि गानों को देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक्टर, एक्टरनी, हिरो, हिरोइन, विलेन आदि शब्दों का भी आगमन हुआ है।

विज्ञान के उन्नति से अनेक नित्य प्रयोजनीय सामग्री का भी आविष्कार हुआ। उनके साथ-साथ उन सामग्रियों के नाम ने भी समाज और भाषा में अपना स्थान बना लिया है। जैसे – प्रेसर कोकार, गेस, चिलिंडर, लाइटार, फ्रीज, वासिंग मेसिन, टी.वी., रेडियो, फेन, डिनर सेट, टी सेट आदि। इसी तरह कपड़ों, खाद्य पदार्थ, घर आदि से संबंधित अनेक शब्दों का आगमन हुआ है। जैसे – कपड़ों से संबंधित शब्द – श्री कुवार्टर, टी शर्ट, मेक्सि, कोट, नाइटि, ट्राउजार आदि, खाद्य पदार्थ से संबंधित शब्द – चुप, नूडल्स, टंडुरि, लच्ची, चिप्स, चालाड, चकलेट, मेगी, चिकेन आदि, घर से संबंधित शब्द – फ्लेट, एपार्टमेंट, विलिडिंग आदि।

आज समाज में संबंधसूचक शब्दों में भी परिवर्तन आया है। माँ-देउटा की स्थान पर पेरेंट्स, खुड़ी, पेही, माही, मामी के स्थान पर आन्टि, मामा, खुड़ा के स्थान आंकल शब्दों का प्रयोग होने लगा है। ठीक उसी प्रकार भाइति, भटि के स्थान पर ब्रादार, सिस्टार आदि शब्दों का प्रयोग होने लगा है। इसका परिणाम यह हुआ कि पहले जो आपसी प्यार का भाव था उसकी कमी आ गयी है। जब ही हम अपने किसी भाई को कजिन ब्रादार कहेंगे तो उसके प्रति वह लगाव या प्यार नहीं रहता है जो अपने भाई के प्रति रहना चाहिए।

चिकित्सा विज्ञान के उन्नति के साथ-साथ नये-नये दवाईयों का भी आविष्कार होने लगा है। इससे समाज के साथ-साथ भाषा में भी नये-नये शब्दों ने अपना स्थान बना लिया है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं – मिडिचिन, इ.सी.जी. एक्स रे, ड्रगछ, अल्ट्राचाउंड, अपारेसन आदि। तथा कुछ बीमारियों के संबंधित नये शब्दों का उदाहरण इस प्रकार हैं – डेंगो, हाइप्रेसर, डायेवेटिक, एड्स, मलेरिया, छवाइन फ्लू आदि।

इसी तरह व्यापार-वाणिज्य, बैंक, कम्पनी आदि के विकास के साथ-साथ बहुत से नये-नये व्यापारिक शब्दों का भी आगमन हुआ है। जैसे – बैंकबेलेंस, ए.टी.एम., चेकबुक, आपडेट, उइड्वेल, सेविस, करेंट, बुटिक, होम डिलिवरी, मेगा अफार, देवाली अफार, बिहु अफार, पलिसी, मेछियरिटी आदि।

निष्कर्ष

मुक्त अर्थनीति के प्रभाव से असमिया भाषा के स्वरूप में ये जो परिवर्तन आयी है वह विशेष रूप से नगरीया जीवन में देखने को मिलती है। ग्राम्य समाज पर इसका प्रभाव कम मात्रा में है। वर्तमान टी.वी., इंटरनेट आदि ने ग्राम और शहर के सीमा को कम कर दिया है। युग और समय के परिवर्तन के साथ-साथ हर चीज में परिवर्तन का आना एक सत्य है। असमिया भाषा और संस्कृति समंवय का संस्कृति है। विविध भाषाओं के शब्दों को अपना कर असमिया भाषा ने अपने ग्रहण क्षमता का प्रमाण दिया है। मुक्त अर्थनीति के प्रभाव से भले ही असमिया भाषा में विविध नये शब्दों का आगमन हुआ है। परंतु इसके साथ ही भाषा में संवेदनहीनता का भाव भी बढ़ गयी है। अपने भाई को भाई कहने से जिस भाव का व्यक्त होता है, वह भाव कजिन ब्रादार कहने से नहीं। इस तरह के विविध शब्दों के आगमन से असमिया भाषा के स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देती है।

संदर्भ

1. भाषा विज्ञान की भूमिका, देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृष्ठ – 42
2. भाषा विज्ञान की भूमिका। शर्मा, देवेन्द्रनाथ, राधाकृष्ण प्रकाशन, सातवीं आवृत्ति : 2013।

3. भाषाविज्ञानर उपक्रमणिका। कूवर, अर्पना, बनलता प्रकाशन, संस्करण : 2015।
4. भारतीय आर्यभाषा आरु असमिया भाषा। बरुवा, अनुप कुमार, पाणिंड, जयंती, कौस्तुभ प्रकाशन।